आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 29-01-15

हम भाग्यशाली आत्माओं को सृष्टि चक्र के ड्रामा का आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देकर, हमें मास्टर ज्ञान सागर बनाने वाले, ज्ञान-सागर बेहद के बाप ने कहा, मीठे बच्चे - यह अनादि बना-बनाया ड्रामा है, यह बहुत अच्छा बना हुआ है, इसके पास्ट, प्रेजन्ट और फ्युचर को तुम बच्चे अच्छी तरह से जानते हो.

बाबा ने हम बच्चों को बताया है कि यह सृष्टि चक्र का ड्रामा हमारे लिए बहुत ही कल्याणकारी हैं. इस ड्रामा में हम आत्मायें तीन-चौथाई (3/4) भाग बहुत सुखी रहते हैं यानी सतयुग से लेकर द्वापर के अन्त तक हम भारतवासी बहुत सुखी होते हैं. इसलिए ही भारत के इतिहास में भी देखेंगे तो लास्ट १२५० साल में से ८०० से भी ज्यादा साल भारत गुलामी में रहा हैं उसके पहले का इतिहास बताता है कि भारत बहुत धनाढ्य था. अब भारत के पिता, परमपिता-परमात्मा शिव स्वयं इस धरा पर आकर हम भारतवासी बच्चों को ही फिर से 21 जन्मो का पवित्रता, सुख और शांति का वर्सा दे रहे हैं. अब हमें भाग्यविधाता बाप की श्रीमत् पर एक्यूरेट चलकर हमारा भाग्य श्रेष्ठ बनाना हैं.

बाबा कि आज की मुरली से भाग्यविधाता बाप ने दी हुई श्रीमत् पर उच्चारण किये हुए महा-वाक्यों को बाप की याद में रहकर पढ़ेंगे तो बाबा हमारी आत्मा में शक्ति भरेगा, जिसे हम बाबा की श्रीमत् को एक्यूरेट फोलो कर सकेंगे.

- बाबा कहते हैं अभी तुम बच्चे जानते हो बाप आया हुआ है, स्थापना हो रही है, आत्मायें वर्सा पा रही हैं. तुम्हारे पास जो भी आते है उनको तुम्हें रास्ता बतलाना है देवी-देवता पद पाने का.

- बाबा कहते हैं तुम्हें सबको समझाना है कि बेहद का बाप अभी नये धर्म की स्थापना कर रहे हैं. यह दुनिया भी पुरानी से नई बननी ही हैं. पुरानी दुनिया में ही बाप आकर ब्राह्मण रचते है. यह ब्राह्मण ही फिर देवता बनेंगे.

- बाबा कहते हैं तुम सब आत्मा भाइयों को याद करना है - एक बाप को. छोटे बच्चों को भी सिखलाओ - बाबा-बाबा कहो. आगे चलकर बाप को जट से जान लेंगे.

- बाबा कहते हैं पवित्र रहने से ही तुम्हारे में कशिश होगी. योग और पवित्रता की ताकत से अन्य आत्मायें तुम्हारे पास खींची चली आयेगी. बाप भी खींचते है तो बहुत वृद्धि को पाते जायेंगे.

- बाबा कहते हैं सबको बताओ कि भगवान निराकार हैं. निराकार शिव भगवान स्वयं कहते है - मामेकम याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मांतर के पाप भस्म हो जायेंगे. यह बात अच्छी तरह से समझाकर उनके पास लिखाते रहो की भगवान निराकार है.

- बाबा कहते हैं जो बच्चे ईश्वरीय पढ़ाई अच्छी रिती पढ़ेंगे वही अच्छे सर्विसेबुल बनेंगे. उन्हें ही यह निश्चय होगा कि भविष्य में मैं जाकर प्रिन्स-प्रिन्सेस बनूंगा. जो बहुतो कि सर्विस करेंगे वही महलों में जायेंगे.

- बाबा कहते हैं बाप के समान तुम्हें बहुत-बहुत मीठा बनना हैं. अपने अन्दर चेक करो - हमारे में देह-अभिमान तो नहीं है? किसी बात में हम फ़ंक तो नहीं हो जाते? कहाँ बिगडते तो नहीं हैं?

- बाबा कहते हैं तुम योगबल में होंगे, शिवबाबा को याद करते रहेंगे तो तुमको कोई भी चमाट आदि मार नहीं सकेंगे. योगबल ही तुम्हारी ढ़ाल है. कोई तुम्हारा कुछ भी कर नहीं सकेंगे. विवेक ऐसा कहता है - देही-अभिमानी को कोई कुछ भी कर नहीं सकेंगे इसलिए कोशिश करनी है देही-अभिमानी बनने की.

- बाबा कहते हैं सारी दुनिया में मनुष्यों की बुद्धि में कृष्ण भगवानुवाच है. तुम्हें सबको पैगाम देना है कि कृष्ण तो सतयुग का प्रिन्स हैं. सबको समझाओ की कृष्ण ऐसा थोड़े ही कहेंगे - मैं ऐसा हूँ. मेरे को कोई जान नहीं सकते. कृष्ण का तो देह है उसे तो सब फट से पहचान जायेंगे. ऐसे भी नहीं कि कृष्ण के तन में भगवान आकर बोलते हैं. भगवान तो अभी पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही आते हैं. जिसको पहचान ने से ही आत्माओं का भाग्य बनता हैं. आत्माओं को स्वर्ग का वर्सा मिलता हैं. यह बात पर ही तुम्हारी विजय होनी हैं.

ॐ शांति.